NAVAJYOTI ESTD : 1936

दैनिक नवज्योति

The Oldest Hindi Daily With Largest Circulation in Rajasthan

अजमेर, जयपुर, कोटा से एक साथ प्रकाशित RJ/AJ/56 • वर्ष 64, अंक 358 • नागौर संस्करण • अजमेर शुक्रवार 29 दिसम्बर 2000 संस्थापक: स्व. कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी • प्रभात •••••• • मूल्य दो रुपए प

कैंसर के इलाज में करिश्माई कामयाबी!

विशेष संवाददाता

जयपुर, 28 दिसम्बर। भारतीय जड़ी-बूटियां कैंसर जैसे जानलेवा रोग से निपटने में सक्षम हैं। राजस्थान के प्रख्यात आयुर्वेदिक चिकित्सक नंदलाल तिवारी ने इसे साबित कर दिखाया है। उन्होंने असम, दार्जिलिंग व महाराष्ट्र में लगातार 18 बरसों तक वनस्पतियों पर अनुसंधान कर 'कर्कटोल' नामक यौगिक ईजाद किया है। 8 (आठ) आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के इस मिश्रण से वे मौत की ओर बढ़ रहे कई कैंसर रोगियों को नई जिन्दगी देने में सफल हुए हैं। पर उनकी इस चमत्कारिक सफलता का केन्द्र व राज्य सरकार ने कोई नोटिस नहीं लिया है। वे 'घर का जोगी जोगणा आन गांव का सिद्ध' साबित हो रहे हैं। अपने देश और राज्य में उनकी उपेक्षा हो रही है। पर विदेशों में उनकी पूछ बढ़ती जा रही है।

डॉ. तिवारी द्वारा तैयार यौगिक खासकर गर्भाशय, स्तन, यकृत, प्रोस्टेट, हड्डी, भोजननली व रक्त के कैंसर के इलाज में काफी असरदार साबित हुआ है। अन्य प्रकार के कैंसर में भी इसके अच्छे नतीजे सामने आए हैं। सिर्फ एसाइटिस कैंसर में यह बेअसर सिद्ध हुआ है। खास बात यह है कि कैंसर की अंतिम अवस्था में भी कई मरणासन्न रोगी इस दवा से ठीक हुए हैं। महाराष्ट्र से राजस्थान लौटकर यहां मालवीय नगर में अपने घर में ही कैंसर पीड़ितों को जीवनदान दे रहे 60 वर्षीय डॉ. तिवारी बीते 20 सालों में सैकड़ों रोगियों को कैंसर से निजात दिला चुके हैं। उन्हें मिली इस करिश्माई कामयाबी पर सहसा भरोसा नहीं होता। पर रोग मुक्त हुए लोग और उनकी जांच रपटें इसकी पुष्टि करती हैं।

नाम व दाम की लालसा न होने और प्रचार से दूर रहने के कारण डॉ. तिवारी अभी तक अपने गृह राज्य में तो लगभग अनजान बने हुए हैं। दूसरे राज्यों में उनकी ख्याति मुंह से मुंह फैली है। सो उनके पास राजस्थान से ज्यादा मरीज महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, पंजाब आदि राज्यों से आते हैं। राजस्थान के इस गुदड़ी के लाल की ख्याति देश की सीमाएं भी पार कर चुकी है। अमेरिका, जापान, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, स्वीडन, स्विट्जरलैण्ड, पाकिस्तान, दुबई, बहरीन, दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों के कैंसर पीड़ितों ने यहां आकर डॉ. तिवारी की दवा 'कर्कटोल' से फायदा उठाया है। अमेरिका व ब्रिटेन के कुछ प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों ने भी डॉ. तिवारी को मरीज रेफर किए हैं। इनमें दुनिया का पहला कैंसर अस्पताल रायल मार्सडेन हॉस्पिटल लंदन, चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल केलीफोर्निया, द ईगल्स क्लिफ मेडिकल प्रेक्टिक्स क्वींसलैण्ड और सेंट थॉमस हॉस्पिटल लंदन शामिल हैं। थॉमस हॉस्पिटल से एफ.आर.सी.एस. की डिग्री लेने में भारतीय डॉक्टर गौरव मानते हैं।

कैंसर उपचार में डॉ. तिवारी की उपलब्धियों से प्रभावित होकर लंदन की एक सामाजिक संस्था ने उनके काम पर फिल्म बनाई है। ब्रिटेन के एशिया टीवी ने उनका आधे घंटे का इन्टरव्यू प्रसारित किया है। इंग्लैण्ड, जर्मनी, बेल्जियम, दक्षिण अफ्रीका, केन्या, सिंगापुर जैसे अनेक देशों में उन्हें उपचार के लिए बुलाया जा चुका है। देश के सबसे बड़े कैंसर उपचार केन्द्र टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल, मुम्बई व कुछ अन्य भारतीय अस्पतालों के डॉक्टरों ने भी डॉ. तिवारी के पास असाध्य (शेष पृष्ठ 4 पर)

कैंसर के इलाज में करिश्माई कामयाबी

(शेष पृष्ठ एक का)

कैंसर रोगी भेजे हैं। इनमें से देश-विदेश के कई मरीज 'कर्कटोल' से ठीक हुए हैं। टाटा कैंसर अस्पताल के एक कैंसर ग्रस्त डॉक्टर को भी इलाज के लिए यहां भेजा जा चुका है।

डॉ. तिवारी अपनी दवा से सभी मरीजों के ठीक होने का दावा नहीं करते। उन्होंने 'नवज्योति' को बताया कि उनके पास ज्यादातर (90 फीसदी) मरीज ऐसे आते हैं जिन्हें हर तरह के लंबे व खर्चीले इलाज के बाद अस्पतालों से जवाब दे दिया जाता है। इन रोगियों को डॉक्टर यह कहकर घर लौटा देते हैं कि वे अब भगवान को याद करें। कैंसर की अंतिम अवस्था वाले ये रोगी मौत के काफी करीब पहुंच चुके होते हैं। फिर भी उनमें से दस से तीस फीसदी मरीजों को उनकी दवा से सौ फीसदी और तीस से पैंतालीस फीसदी रोगियों को काफी लाभ मिला है। जबकि पैंतालीस से पचपन फीसदी रोगियों को फायदा नहीं हुआ। अंतिम अवस्था के कैंसर में उन्नत एलोपैथिक चिकित्सा से 5 से 10 फीसदी मरीजों को ही लाभ हो पाता है। ऐसे में डॉ. तिवारी की सफलता का आंकड़ा बहुत मायने रखता है। कैंसर की दूसरी अवस्था (सैकंड स्टेज) वाले रोगियों में अपनी सफलता की दर 45 से 50 फीसदी बताते हुए वे दावा करते हैं कि उनकी दवा प्रारम्भिक अवस्था वाले ज्यादातर (80 फीसदी) मरीजों को पूरी तरह चंगा करने की कुव्वत रखती है। देश-विदेश की प्रयोगशालाओं में किए गए परीक्षणों में यह दवा मानव शरीर के लिए निरापद (निर्दोष, दुष्प्रभाव रहित) पाई गई है।

इन परीक्षणों की रपटों के साथ डॉ. तिवारी के पास देश-परदेश के मरीजों की जांच रपटें भी मौजूद हैं। उनमें ऐसी रपटें शामिल हैं जिनमें जिन प्रयोगशालाओं ने जिन मरीजों में कैंसर होना प्रमाणित किया था, उन्हीं प्रयोगशालाओं ने डॉ.तिवारी के इलाज के बाद जांच कर उन्हीं मरीजों में कैंसर का प्रभाव शून्य (निल) बताया है। 1979 से कैंसर का इलाज कर रहे डॉ. तिवारी ठीक हो चुके कई मरीजों का रिकॉर्ड जला चुके हैं क्योंकि उनके पास उसे रखने की जगह नहीं है। 1985 से 90 तक के रिकॉर्ड के आधार पर जुटाए उनके आंकड़े बताते हैं कि इस अरसे में उन्होंने 1977 रोगियों का इलाज किया। उनमें भोजन नली के कैंसर के 429, स्तन कैंसर के 208, गर्भाशय कैंसर के 178 व ब्लड कैंसर के 162 रोगी थे। भोजननली के कैंसर रोगियों में से 28 फीसदी को सौ फीसदी फायदा हुआ। 27 फीसदी को काफी लाभ मिला जबकि 45 फीसदी को फायदा नहीं हुआ।

स्तन कैंसर के रोगियों में से दस फीसदी को सौ फीसदी लाभ मिला, 44 फीसदी को काफी फायदा हुआ जबकि 46 फीसदी लाभ से वंचित रहे। गर्भाशय के कैंसर के 15 फीसदी मरीजों को सौ फीसदी व 42 फीसदी को बहुत फायदा पहुंचा जबकि 43 फीसदी को कोई लाभ नहीं हुआ। इसी तरह रक्त कैंसर के रोगियों में से 13 फीसदी पूरी तरह ठीक हो गए, 35 फीसदी को काफी आराम मिला जबकि 52 फीसदी को लाभ नहीं हुआ। 91 से 99 तक के आंकड़ों को वे अभी तालिकाबद्ध नहीं कर पाए हैं।

डॉ. तिवारी के पास मौजूद मरीजों के ब्यौरे व प्रयोगशाला जांच रपटों से पता चलता है कि उज्जैन की उत्तमराव बाई (60) में बच्चेदानी का कैंसर अवस्था में पहुंच चुका था। वे 4 माह तक डॉ. तिवारी की दवा 'कर्कटोल' का सेवन कर पूरी तरह रोगमुक्त हो गई। इसी तरह के कैंसर से पीड़ित संगरूर (पंजाब) की सुषमा आहूजा (36), राड़ी जिला बीड़, महाराष्ट्र की अर्चना व संतराव गंगणे (28), तुलजापुर जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) की सकुबाई (35), बार्सी जिला शोलापुर महाराष्ट्र की केसरबाई (48), खातीपुरा, जयपुर (राज.) की शांति देवी कुमावत (45), मंगलबेडा जिला शोलापुर महाराष्ट्र की बालकाबाई माने (70), इंदौर (म.प्र.) की डॉ. एम. के वागले 62 जैसी कई महिलाएं 4 से 16 माह तक कर्कटोल के सेवन से पूरी तरह ठीक हो गई।

जयपुर के झोटवाड़ा निवासी रूपसिंह (45) बताते हैं कि डॉ. तिवारी के एक साल से ईलाज से उन्हें पेट के कैंसर से निजात मिल चुकी है। यहां के बरकतनगर निवासी एस. के. शर्मा (68) के अनुसार कर्कटोल ने उन्हें पेट के कैंसर से थर्ड स्टेज से मुक्ति दिलाई है। 15/25 पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली निवासी डॉ. महेन्द्र जेठी (57) रीढ़ की हड्डी के कैंसर से पीड़ित होकर बिस्तर पकड़ चुके थे। सभी हड्डियों में कैंसर फैल जाने से उन्हें प्रेक्टिस बंद कर देनी पड़ी थी। डा. तिवारी से 90-91 में दो साल ईलाज कराने के बाद पूरी तरह रोगमुक्त होकर वे फिर से प्रक्टिस कर रहे हैं। खेतड़ी तांबा परियोजना के चिकित्सा अधिकारी डॉ. एस.के. चुग का रक्त कैंसर से पीड़ित बेटा सुरेश चुग 3 साल के ईलाज से पूरा ठीक हो चुका है। दिल्ली की विजया जोशी ने फोन पर बताया कि अमरीका में रह रही उनकी कैंसरग्रस्त भतीजी अंजुला की हालत कर्कटोल के सेवन से दो माह में काफी सुधर गई है। अब वह पहले की तरह सारे काम करने लगी है।

दिल्ली के उमेश बत्रा (28) को पेट का कैंसर था। सारे डॉक्टर जवाब दे चुके थे। टाटा कैंसर अस्पताल, मुंबई में ऑपरेशन के लिए उसका पेट खोला गया। अंदर की हालत बेहद खराब देख डाक्टरों ने बिना ऑपरेशन किए वापस दिल्ली भेज दिया। उसकी जिंदगी के दिन गिनती के बता देने से घर में रोना-पीटना मच गया। दो साल पहले ही उमेश की शादी हुई थी। उसकी मरणासन्न हालत देख डा.तिवारी ने भी दवा देने से मना कर दिया। पर परिजन नहीं माने। उनकी जिद पर बिना पैसे लिए दो माह की दवा दे दी। तब तक परिजनों को इसका भी भरोसा नहीं था कि उमेश दिल्ली लौटने तक जिंदा रह पाएगा। पर कर्कटोल का करिश्मा काम कर गया। उमेश स्वस्थ होकर 15 सालों से अपना काम धन्धा कर रहा है। अब वह ट्रांसपोर्ट नगर, जयपुर में ऑटो पार्टस की दुकान चला रहा है। यहीं के महाराणा प्रताप नगर, खातीपुरा निवासी टैंकर चालक रामसिंह चौहान (54) को कर्कटोल ने 6 माह में तीसरी अवस्था के गले के कैंसर से निजात दिलाई है। रोग ज्यादा फैल जाने से वह बिस्तर पकड़ चुका था। अब वापस ट्रक दौड़ा रहा है।

101 वर्षा, 7 बंगले, अंधेरी, मुंबई निवासी दवा फैक्ट्री मालिक तपस विस्वास की पत्नी जफराइन (47) ने रीढ की हड्डी के कैंसर से छुटकारा पाने के लिए मई से कर्कटोल लेना शुरू किया है। उन्होंने डा. तिवारी को लिखा है कि 7 माह में ही उन्हें 75 फीसदी फायदा हो चुका है। कर्कटोल ब्रेन ट्यूमर व कुछ अन्य रोगों के इलाज में भी प्रभावशाली साबित हो रही है।